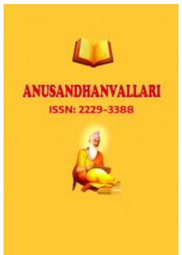

Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
May 2026
ISSN 2229-3388

स्वामी विवेकानंद के वैदिक शिक्षा के सिद्वांत के परिप्रेक्ष्य में एन. ई. पी. 2020 का एक अध्ययन

Swati Gaur
Name of The Supervisor Prof. Dinesh Pandey
Subject Education Institute of Education and Research Faculty of Humanities Mangalayatan University, Beswan, Aligarh

सारांश शिक्षा किसी भी राष्ट्र की उन्नति और विकास का आधार होती है। यह केवल ज्ञानार्जन या सूचना प्राप्ति की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों के संवर्धन का भी प्रमुख साधन है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को सदैव जीवन–मूल्यों, आत्मज्ञान और लोककल्याण से जोड़ा गया है (Sharma 2018)। उपनिषदों और वेदों में शिक्षा को ''साक्षात्कृत धर्म'' माना गया, जिसका उद्देश्य व्यक्ति के भीतर निहित सामर्थ्य को जाग्रत करना और उसे सत्य, अहिंसा, सेवा और समर्पण के मार्ग पर अग्रसर करना था। प्राचीन भारत की गुरुकुल परंपरा इसी दृष्टिकोण पर आधारित थी, जहाँ शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न होकर आध्यात्मिक, नैतिक और व्यावहारिक जीवन की तैयारी भी करती थी (Pathak 2015)। आधुनिक काल में, शिक्षा के स्वरूप और उद्देश्यों में अनेक परिवर्तन हुए। औपनिवेशिक प्रभाव के कारण शिक्षा का स्वरूप मुख्यतः नौकरी–उन्मुख और सूचना–प्रधान हो गया। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के वास्तविक स्वरूप पर विशेष बल दिया। उन्होंने शिक्षा को ''मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया'' बताया और कहा कि ''शिक्षा का अर्थ है मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता का अभिव्यक्त होना'' (Vivekananda 2017 Vol- 4)। विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संग्रह करना नहीं, बल्कि चरित्र का निर्माण, आत्मबल का विकास और समाज एवं राष्ट्र की सेवा करना है।

मुख्य भाब्द, गुरुकुल परंपरा, साक्षात्कृत धर्म'',आत्मनिर्भरता, आत्मबल, एनईपी आदि।

परिचय, स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन नव्य वेदान्त पर आधारित है, जिसे उन्होंने भारतीय समाज और आधुनिक विश्व की आवश्यकताओं के अनुरूप व्याख्यायित किया। उनके नव्य वेदान्त शिक्षा सिद्धांत के प्रमुख तत्व हैं। आत्मबल और आत्मनिर्भरता, चरित्र निर्माण, व्यावहारिकता, योग और ध्यान का समावेश, स्त्री शिक्षा का प्रोत्साहन, सामाजिक सेवा, तथा मूल्य–आधारित जीवन दृष्टि (Bhuyan 2016)। विवेकानन्द का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को केवल रोजगार या उपजीविका का साधन न बनाकर उसे आत्मज्ञान, आत्मविश्वास और लोककल्याण की ओर अग्रसर करे।

इसी प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत एक ऐतिहासिक दस्तावेज है, जो शिक्षा को समग्र (holistic), बहुविषयक (multidisciplinary) और कौशल–आधारित (skill&based) बनाने पर बल देता है। यह नीति 21वीं सदी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भारतीय शिक्षा को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने का प्रयास करती है। इसमें शिक्षा के उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सृजनात्मकता, समालोचनात्मक चिंतन, अनुसंधान, नवाचार, मूल्य एवं नैतिकता, और भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा का संरक्षण भी शामिल है (Ministry of Education 2020)। एनईपी 2020 का प्रमुख लक्ष्य ''ज्ञान आधारित समाज'' का निर्माण करना है, जहाँ शिक्षा व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास का माध्यम बने। इस नीति में पाँच प्रमुख आयामों पर बल दिया गया हैरू

स्कूली शिक्षा में सुधार – 5+3+3+4 ढाँचे के माध्यम से शिक्षा को अधिक लचीला और बालकेन्द्रित बनाना। उच्च शिक्षा में बहुविषयकता – विद्यार्थियों को लचीले विकल्प और बहुविषयक अधिगम प्रदान करना। अनुसंधान और नवाचार – राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (NRF) की स्थापना। डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा – तकनीकी और ई–लर्निंग संसाधनों का अधिकतम उपयोग।

भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य शिक्षा – पाठ्यक्रम में भारतीय भाषाओं, संस्कृति और नैतिक मूल्यों का समावेश। यदि हम स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त शिक्षा सिद्धांत और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की तुलना करें, तो स्पष्ट होता है कि दोनों का उद्देश्य ''सर्वांगीण विकास'' (Holistic Development) है। विवेकानन्द ने शिक्षा को चरित्र निर्माण, आत्मबल और लोककल्याण से जोड़ा, वहीं एनईपी 2020 ने शिक्षा को रोजगार, कौशल और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के साथ–साथ भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य–आधारित दृष्टिकोण से जोड़ने का प्रयास किया है। दोनों में ''मूल्य–शिक्षा'' और ''भारतीय सांस्कृतिक आधार'' की अवधारणा समान रूप से महत्वपूर्ण है (Taneja 2019)। हालाँकि, कुछ भिन्नताएँ भी विद्यमान हैं। (Kumar 2024) विवेकानन्दीय दृष्टिकोण में आध्यात्मिकता और आत्मज्ञान शिक्षा का मूल केंद्र है, जबकि एनईपी 2020 का झुकाव कौशल, प्रौद्योगिकी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की ओर अधिक है। विवेकानन्द शिक्षा में गुरु–शिष्य परंपरा, योग और ध्यान पर बल देते हैं, जबकि एनईपी डिजिटल लर्निंग और आधुनिक पद्धतियों को प्राथमिकता देती है।

शोध पत्र अत्यंत प्रासंगिक और मौलिक है, क्योंकि यह न केवल शिक्षा के दार्शनिक एवं नीतिगत पहलुओं को जोड़ता है, बल्कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की चुनौतियों जैसे मूल्य हीनता, शिक्षा का व्यावसायीकरण, और

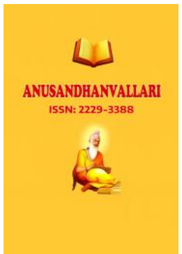

Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
May 2026
ISSN 2229-3388

मानसिक स्वास्थ्य संकट के समाधान की दिशा भी प्रदान करता है। स्वामी विवेकानन्द का नव्य वेदान्त शिक्षा दर्शन शिक्षा को ''मनुष्य निर्माण'' का साधन बनाता है, जबकि एनईपी 2020 इसे ''ज्ञान–आधारित समाज'' निर्माण का साधन मानती है। दोनों के तुलनात्मक और समालोचनात्मक अध्ययन से भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए संतुलित एवं मूल्य–सम्पन्न भविष्य की दिशा तय की जा सकती है।

भोध पत्र का व्यापक क्षेत्र (Field of Study)

शोध का व्यापक क्षेत्र निर्धारित करना किसी भी अकादमिक अध्ययन की आवश्यक शर्त है। यह क्षेत्र यह स्पष्ट करता है कि शोध किस ज्ञान–क्षेत्र (domain of knowledge) से संबंधित है, किन विषयों से इसका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संबंध है, तथा इसके परिणाम किन–किन क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन ''स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त शिक्षा सिद्धांत'' और ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020'' के तुलनात्मक और समालोचनात्मक विश्लेषण पर आधारित है। अतः यह शोध मुख्यतः शिक्षा दर्शन (Philosophy of Education), शैक्षिक नीतियाँ (Educational Policies) और तुलनात्मक शिक्षा (Comparative Education) के क्षेत्र में आता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, नैतिक दर्शन और भारतीय ज्ञान परंपरा जैसे सहायक क्षेत्रों से भी जुड़ा हुआ है।

शिक्षा दर्शन का क्षेत्र (Domain of Philosophy of Education)

शिक्षा दर्शन का प्रमुख कार्य शिक्षा के उद्देश्यों, स्वरूप और साधनों की व्याख्या करना है। शिक्षा दर्शन यह बताता है कि शिक्षा क्यों आवश्यक है, इसका अंतिम लक्ष्य क्या होना चाहिए और इसके लिए कौन–से साधन उपयोगी होंगे (Taneja 2019)। स्वामी विवेकानन्द का नव्य वेदान्त शिक्षा सिद्धांत मूलतः एक दार्शनिक दृष्टिकोण है, जिसमें वेदांत की आध्यात्मिक परंपरा और आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं का समन्वय है। विवेकानन्द ने शिक्षा को ''मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति'' कहा (Vivekananda] 2017)। यह दृष्टिकोण शिक्षा दर्शन के अंतर्गत आता है क्योंकि यह शिक्षा के अंतिम लक्ष्य दृ आत्मज्ञान, चरित्र निर्माण और राष्ट्र सेवा दृ की ओर इंगित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी एक दार्शनिक आधार पर निर्मित है। (Prajapati and Mourya 2025)यह शिक्षा को समग्र (holistic), बहुविषयक (multidisciplinary) और मूल्य–आधारित बनाने पर बल देती है। यह नीति भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और वैश्विक प्रतिस्पर्धा दोनों को साथ लेकर चलने की बात करती है

Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
May 2026
ISSN 2229-3388

(Ministry of Education] 2020)। इस प्रकार, यह अध्ययन शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में आता है क्योंकि यह दोनों दृष्टिकोणों – विवेकानन्दीय दर्शन और एनईपी 2020 – के मूल उद्देश्यों और दार्शनिक आधारों का तुलनात्मक अध्ययन करता है।

शिक्षा नीति का क्षेत्र (Domain of Educational Policy Studies)

शिक्षा नीति अध्ययन (Educational Policy Studies) शिक्षा की संरचना, उद्देश्यों और कार्यान्वयन के औपचारिक दस्तावेजों का अध्ययन है। भारत में शिक्षा नीतियों का इतिहास 1948–49 के विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग, 1968 और 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों से लेकर 2020 तक फैला हुआ है। एनईपी 2020 इन सभी नीतियों से भिन्न और व्यापक है, क्योंकि यह शिक्षा के सभी स्तरों दृ प्रारंभिक बाल्यावस्था से उच्च शिक्षा और शिक्षक शिक्षा तक दृ को समाहित करती है (Pathak] 2015)।

इस शोध पत्र का एक प्रमुख क्षेत्र यह भी है कि एनईपी 2020 में प्रस्तुत उद्देश्यों और सिद्धांतों को विवेकानन्दीय नव्य वेदान्त शिक्षा दृष्टिकोण के साथ किस हद तक जोड़ा जा सकता है। इस प्रकार यह शोध शिक्षा नीति अध्ययन (Educational Policy Studies) के क्षेत्र में योगदान करता है।

3. तुलनात्मक शिक्षा का क्षेत्र (Domain of Comparative Education)

तुलनात्मक शिक्षा का उद्देश्य दो या अधिक शिक्षा प्रणालियों, नीतियों या दार्शनिक दृष्टिकोणों का विश्लेषण करना है, ताकि समानताओं, भिन्नताओं और संभावित सुधारों की पहचान की जा सके (Sadler 2010)। प्रस्तुत शोध तुलनात्मक शिक्षा का उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि इसमें ''विवेकानन्दीय शिक्षा सिद्धांत'' और ''एनईपी 2020'' के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। यह तुलनात्मक दृष्टिकोण केवल ऐतिहासिक या दार्शनिक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर भी महत्त्वपूर्ण है। उदाहरणस्वरूप, विवेकानन्दीय शिक्षा में योग, ध्यान और चरित्र निर्माण को प्राथमिकता दी गई है, जबकि एनईपी 2020 में डिजिटल शिक्षा, बहुविषयक अधिगम और कौशल विकास पर बल है। तुलनात्मक शिक्षा का दृष्टिकोण दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायक सिद्ध होता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य शिक्षा का क्षेत्र (Domain of Indian Knowledge System and Value Education)

भारत की शिक्षा परंपरा में ''सत्यम, शिवम सुन्दरम'' का आदर्श विद्यमान है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि जीवन को उच्चतर मूल्यों से जोड़ना है (Sharma 2018)। विवेकानन्दीय शिक्षा सिद्धांत इसी भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक रूप है, जिसमें वेदांत के सिद्धांतों और सामाजिक यथार्थ का समन्वय है। एनईपी 2020 भी भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य शिक्षा को विशेष महत्त्व देती है। इसमें स्पष्ट कहा गया है कि भारतीय भाषाओं, संस्कृति और परंपराओं को पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाएगा (Ministry of Education 2020)। इसलिए यह शोध भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य शिक्षा के क्षेत्र से भी प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है।

मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय क्षेत्र (Psychological and Sociological Dimensions)

शिक्षा केवल दार्शनिक या नीतिगत प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसका सीधा प्रभाव विद्यार्थी के व्यक्तित्व, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन पर पड़ता है। विवेकानन्द का कहना था कि शिक्षा का कार्य ''आत्मबल'' और ''आत्मविश्वास'' को विकसित करना है (Vivekananda 2017)। यह एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण है। वहीं एनईपी 2020 भी विद्यार्थियों की रचनात्मकता, समालोचनात्मक चिंतन और सामाजिक कौशलों को विकसित करने पर बल देती है। यह समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और समरसता का माध्यम माना गया है (Bhuyan 2016)।

नीतिगत और व्यावहारिक क्षेत्र (Policy and Practice Dimension)

यह शोध केवल सैद्धांतिक स्तर पर सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा नीति और उसके कार्यान्वयन की व्यावहारिक चुनौतियों को भी सामने लाता है। एनईपी 2020 का सफल क्रियान्वयन तभी संभव है जब शिक्षक, विद्यार्थी और शिक्षा प्रशासक विवेकानन्दीय आदर्शों जैसे चरित्र निर्माण, सेवा भावना और आत्मबल को अपनाएँ। इस प्रकार, यह अध्ययन शिक्षा की नीतिगत और व्यावहारिक दोनों ही परिप्रेक्ष्यों से जुड़ा हुआ है।

समेकित दृष्टि (Integrated Perspective)

इस प्रकार, प्रस्तुत शोध का व्यापक क्षेत्र बहुआयामी है।

- शिक्षा दर्शन – शिक्षा के उद्देश्य और स्वरूप का दार्शनिक आधार।
- शिक्षा नीति – एनईपी 2020 की संरचना और उद्देश्यों का विश्लेषण।
- तुलनात्मक शिक्षा – विवेकानन्दीय दृष्टिकोण और एनईपी का तुलनात्मक अध्ययन।
- भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य शिक्षा – शिक्षा को नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ना।
- मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय पहलू – शिक्षा का प्रभाव व्यक्तित्व और समाज पर।
- नीतिगत और व्यावहारिक क्षेत्र – नीति के क्रियान्वयन और सुधार की संभावनाएँ।

इस प्रकार यह अध्ययन न केवल शिक्षा दर्शन और शिक्षा नीति के क्षेत्र में योगदान करेगा, बल्कि भारतीय समाज और शिक्षा व्यवस्था के लिए एक समग्र और मूल्यपरक दृष्टि प्रस्तुत करेगा।

किसी भी शोध पत्र का चयन शोधार्थी की दृष्टि, शोध की आवश्यकता तथा उसके व्यावहारिक और शैक्षिक महत्व पर आधारित होता है। प्रस्तुत शोध विषय – "स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त शिक्षा सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समालोचनात्मक अध्ययन" – का चयन कई कारणों से प्रासंगिक और औचित्यपूर्ण है। सबसे पहले, भारतीय शिक्षा दर्शन और समकालीन शिक्षा नीति के बीच संबंध की खोज अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं है, बल्कि नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास भी है (Sharma 2018)।

आज की शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण मूल्य–आधारित दृष्टि कहीं न कहीं उपेक्षित हो रही है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द का नव्य वेदान्त शिक्षा सिद्धांत शिक्षा को ''चरित्र निर्माण'' और ''मनुष्य निर्माण'' का साधन मानता है (Vivekananda 2017)। अतः यह शोध भारतीय शिक्षा नीति को दार्शनिक दृष्टिकोण से परखने का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

दूसरे, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक परिवर्तन का संकेत है। यह नीति शिक्षा को समग्र (holistic), बहुविषयक (multidisciplinary), और कौशल–आधारित (skill&based) बनाने पर बल देती है। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक मूल्यों और मातृभाषा के संरक्षण

का भी उल्लेख है (Ministry of Education 2020)। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि क्या यह नीति वास्तव में विवेकानन्दीय शिक्षा दृष्टिकोण के आदर्शों जैसे आत्मनिर्भरता, आत्मबल, मूल्य शिक्षा और समाज सेवा से सामंजस्य रखती है? इसी प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ना इस शोध का औचित्य है।

तीसरे, वर्तमान समय की शैक्षिक और सामाजिक चुनौतियाँ इस शोध की प्रासंगिकता को और बढ़ा देती हैं। आज की शिक्षा प्रणाली में व्यावसायीकरण, प्रतिस्पर्धा, बेरोजगारी और मूल्यहीनता जैसी समस्याएँ गहराती जा रही हैं (Pathak 2015)। विद्यार्थी ज्ञान तो अर्जित कर रहे हैं, लेकिन उनमें आत्मबल, सेवा भावना और नैतिक चेतना का अभाव देखा जाता है। विवेकानन्द का मानना था कि शिक्षा का मुख्य लक्ष्य आत्मविश्वास और आत्मबल को जाग्रत करना है (Bhuyan 2016)। इस दृष्टि से एनईपी 2020 और विवेकानन्दीय शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन व्यावहारिक और सामाजिक समाधान प्रदान कर सकता है।

चौथे, इस शोध का औचित्य भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा नीति का समन्वय है। एनईपी 2020 में भारतीय भाषाओं, संस्कृति और परंपराओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात की गई है। यह विवेकानन्दीय विचार ‘‘भारतीयता’’ और ‘‘आत्मनिर्भरता’’ की ओर संकेत करता है। अतः यह शोध भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य करेगा।

अंत में, इस शोध पत्र का चयन भविष्य की शिक्षा नीतियों और व्यावहारिक सुधारों के लिए भी उपयोगी है। यदि विवेकानन्दीय शिक्षा दर्शन और एनईपी 2020 के सामंजस्य एवं विरोधाभासों को पहचाना जाए, तो शिक्षा नीति–निर्माताओं, शिक्षकों और समाज को दिशा मिल सकती है। इस प्रकार यह शोध केवल सैद्धांतिक महत्व का नहीं है, बल्कि शिक्षा व्यवस्था के व्यावहारिक सुधार में भी योगदान देगा।

इस प्रकार, विषय के चयन का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि यह शोध भारतीय शिक्षा दर्शन और आधुनिक शिक्षा नीति के मध्य एक सेतु का कार्य करेगा। यह न केवल शिक्षा के उद्देश्यों और स्वरूप को स्पष्ट करेगा, बल्कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं के समाधान हेतु भी मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

शोध पत्र का समयानुकूल महत्व (Contemporary Relevance of the Study)

किसी भी शोध की प्रासंगिकता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि वह वर्तमान समाज, शिक्षा और मानवीय जीवन की चुनौतियों का समाधान किस प्रकार प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध विषय ”स्वामी विवेकानन्द के

नव्य वेदान्त शिक्षा सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समालोचनात्मक अध्ययन" आज के समय में अनेक कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी है।

आज की शिक्षा व्यवस्था में सबसे बड़ी चुनौती नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण की कमी है। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना या तकनीकी दक्षता विकसित करना नहीं होना चाहिए, बल्कि यह मनुष्य को अच्छे नागरिक और जिम्मेदार सामाजिक प्राणी बनाने का भी साधन होना चाहिए (Sharma 2018)। आधुनिक समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा, स्वार्थ और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द का यह विचार अत्यंत प्रासंगिक है कि ''शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता को प्रकट करना है'' (Vivekananda 2017 Vol- 4)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी ''मूल्य–आधारित शिक्षा'' और ''भारतीय संस्कृति का संरक्षण'' विशेष रूप से उल्लिखित है (Ministry of Education 2020)। इस प्रकार, विवेकानन्दीय दृष्टिकोण और एनईपी 2020 दोनों मूल्य शिक्षा को शिक्षा का केंद्र मानते हैं। आज जब शिक्षा का व्यावसायीकरण और मूल्यहीनता एक बड़ी चुनौती है, तब यह शोध इन दोनों दृष्टिकोणों के समन्वय से मूल्य–आधारित शिक्षा को नई दिशा प्रदान कर सकता है। 21वीं सदी की सबसे बड़ी शैक्षिक चुनौती है – रोजगार और कौशल विकास। बेरोजगारी, शिक्षा की अप्रासंगिकता और कौशल की कमी युवाओं में निराशा और तनाव का कारण बन रही है। एनईपी 2020 इस चुनौती का समाधान प्रस्तुत करते हुए कौशल–आधारित और बहुविषयक शिक्षा पर बल देती है। इसमें व्यावसायिक शिक्षा, उद्यमिता और डिजिटल कौशलों को शिक्षा का अंग बनाया गया है (Ministry of Education 2020)।

स्वामी विवेकानन्द ने भी शिक्षा को ''जीवनोपयोगी'' बनाने की आवश्यकता पर बल दिया था। उनके अनुसार शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित न रहकर व्यावहारिक जीवन में उपयोगी होनी चाहिए। उन्होंने युवाओं को आत्मनिर्भरता और कार्यकुशलता का संदेश दिया (Bhuyan 2016)। आज के समय में जब रोजगार और कौशल की समस्या बढ़ रही है, विवेकानन्दीय शिक्षा दर्शन और एनईपी 2020 का यह सम्मिलित दृष्टिकोण शिक्षा को अधिक व्यावहारिक और प्रासंगिक बना सकता है।

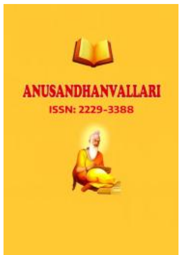

Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
May 2026
ISSN 2229-3388

मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन की आवश्यकता

आज की शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों पर शैक्षणिक दबाव और प्रतिस्पर्धा इतनी बढ़ गई है कि मानसिक स्वास्थ्य संकट एक गंभीर समस्या बन गई है। आत्महत्या की बढ़ती घटनाएँ, अवसाद और तनाव इसका प्रमाण हैं। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द के विचार – आत्मबल, आत्मविश्वास और ध्यान–योग – अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। उनके अनुसार शिक्षा का कार्य मनुष्य के भीतर शक्ति और आत्मविश्वास उत्पन्न करना है (Vivekananda 2017)। एनईपी 2020 भी मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को महत्व देती है। इसमें जीवन–कौशल, सामाजिक–भावनात्मक शिक्षा (socio&emotional learning) और विद्यार्थियों की भलाई पर बल दिया गया है (Ministry of Education 2020)। इस दृष्टि से यह शोध शिक्षा को मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन से जोड़ते हुए व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

शिक्षा का एक और समकालीन मुद्दा है। भारतीयता और वैश्वीकरण का संतुलन। एक ओर शिक्षा को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप बनाना है, वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कृति, भाषाओं और परंपराओं का संरक्षण भी आवश्यक है। विवेकानन्द ने भारतीय ज्ञान परंपरा को विश्व में प्रसारित करने का संदेश दिया और ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना पर बल दिया (Sharma 2018)। एनईपी 2020 भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण है। इसमें मातृभाषा में शिक्षा, भारतीय ज्ञान प्रणाली, योग और आयुर्वेद जैसी परंपराओं को शिक्षा में शामिल करने की बात कही गई है (Ministry of Education 2020)। यह शोध इन दोनों दृष्टिकोणों को मिलाकर शिक्षा में भारतीयता और वैश्विकता के संतुलन की संभावना खोजता है।

निश्कर्श, आज की शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। लेकिन शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण की गुणवत्ता चिंताजनक है। विवेकानन्द ने शिक्षक को ''प्रेरक'' और ''आदर्श'' माना है, जिसका कर्तव्य है विद्यार्थियों में आत्मबल और चरित्र का विकास करना (Vivekananda 2017)। एनईपी 2020 भी शिक्षक शिक्षा में सुधार के लिए चार वर्षीय समेकित बी.एड. कार्यक्रम, सतत व्यावसायिक विकास और शिक्षक की गुणवत्ता पर बल देती है (Ministry of Education 2020)। यह शोध पत्र में इन दोनों दृष्टिकोणों के माध्यम से शिक्षक की भूमिका को नई दिशा प्रदान कर सकता है। आज जब भारत ''ज्ञान–आधारित समाज'' बनने की दिशा में अग्रसर है, तब शिक्षा का राष्ट्रनिर्माण में योगदान और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। विवेकानन्द ने स्पष्ट कहा था कि ''युवाओं को जागो और राष्ट्रनिर्माण के कार्य में लगो'' (Bhuyan 2016)। उनके अनुसार शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है। ''मनुष्य निर्माण और राष्ट्र निर्माण'' एनईपी 2020 का भी उद्देश्य

Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
May 2026
ISSN 2229-3388

भारत को ''वैश्विक ज्ञान महाशक्ति'' बनाना है। यह नीति शिक्षा को सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) और राष्ट्रीय प्रगति से जोड़ती है (Ministry of Education 2020)। इस प्रकार यह शोध शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण और वैश्विक नेतृत्व दोनों से जोड़ते हुए इसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है। समग्र रूप से देखें तो यह शोध आज के समय में इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह शिक्षा के समकालीन संकटों – मूल्यहीनता, बेरोजगारी, मानसिक स्वास्थ्य संकट, सांस्कृतिक असंतुलन और शिक्षक शिक्षा की कमजोरियों – का समाधान प्रस्तुत करता है। स्वामी विवेकानन्द का नव्य वेदान्त शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, दोनों ही शिक्षा को मूल्यपरक, समग्र और जीवनो उपयोगी बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। अतः यह शोध पत्र न केवल अकादमिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज, राष्ट्र और शिक्षा व्यवस्था के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

सन्दर्भ गन्थ सूची

[1] Bhuyan, P. (2016). *Swami Vivekananda: The prophet of modern India*. New Delhi: APH Publishing.

[2] Bhuyan, P. (2016). *Swami Vivekananda: The prophet of modern India*. New Delhi: APH Publishing.

[3] Bhuyan, P. (2016). *Swami Vivekananda: The prophet of modern India*. New Delhi: APH Publishing.

[4] Bhuyan, P. (2016). *Swami Vivekananda: The prophet of modern India*. New Delhi: APH Publishing.

[5] Bhuyan, P. (2016). *Swami Vivekananda: The prophet of modern India*. New Delhi: APH Publishing.

[6] Bhuyan, P. (2016). *Swami Vivekananda: The prophet of modern India*. New Delhi: APH Publishing.

[7] Bhuyan, P. (2016). *Swami Vivekananda: The prophet of modern India*. New Delhi: APH Publishing.

[8] Bhuyan, P. (2016). *Swami Vivekananda: The prophet of modern India*. New Delhi: APH Publishing.

[9] Bhuyan, P. (2016). *Swami Vivekananda: The prophet of modern India*. New Delhi: APH Publishing.

[10] Bhuyan, P. (2016). *Swami Vivekananda: The prophet of modern India*. New Delhi: APH Publishing.

[11] Bhuyan, P. (2016). *Swami Vivekananda: The prophet of modern India*. New Delhi: APH Publishing.

[12] Chatterjee, S. (1994). *The philosophy of Swami Vivekananda*. Calcutta: Progressive Publishers.

[13] Sunkara, S. P. (2025). Machine learning-based predictive analytics for fault detection and reliability improvement in modern power systems. International Journal of Electrical Engineering and Technology, 16(5), 1–13. https://doi.org/10.34218/IJEET_16_05_001

[14] Kumar, A. (2024). Inclusive Education in India: Opportunities and Challenges, ShodhSamajik: Journal of Social Studies, 1(1), 99–103. https://doi.org/10.29121/ShodhSamajik.v1.i1.2024.96

[15] Gajula, S., Kandula, S.T.R. (2026). Securing Financial Data in Multi-Tenant Clouds Through AI, Blockchain, and Attribute-Based Encryption. In: Nguyen, GN., Swaroop, A., Shukla, P. (eds) Proceedings of Fifth International Conference on Computing and Communication Networks. ICCCN 2025. Lecture Notes in Networks and Systems, vol 1859. Springer, Cham. https://doi.org/10.1007/978-3-032-21499-7_33